विस्तीर्ण क्षितिज

क्षेत्रीय कार्यशाला गोष्ठी

हिन्दू कुश-हिमालय क्षेत्र में सामुदायिक वन व्यवस्थापन में स्थानीय,
निर्वाचित संस्थाओं की भूमिका

१६-२१ मार्च १९९८

अन्तर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र द्वारा आयोजित

काठमाण्डू, नेपाल

विस्तीर्ण क्षितिज

क्षेत्रीय कार्यशाला गोष्ठी
हिन्दू कुश-हिमालय क्षेत्र में सामुदायिक वन व्यवस्थापन में स्थानीय,
निर्वाचित संस्थाओं की भूमिका
१६-२१ मार्च १९९८

प्रशासन स्रोत सुविधा, यू.एन.डी.पी., इस्लामाबाद,
पाकिस्तान, द्वारा सहयोगित

अन्तर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र द्वारा आयोजित
काठमाण्डू, नेपाल

सर्वाधिकार © २०००
अन्तर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र

आवरण फोटो: घडीकी सुईके घुमने के आकार जैसा
१ इसिमोड के महानिर्देशकको हिन्दू कुश-हिमालयकी मिट्टीका हस्तांतरण करते हुए ।
२. स्थानीय विकास एवं भू-संरक्षण मन्त्रालयके सम्माननीय मन्त्रीद्वयद्वारा संयुक्त उद्घाटन
३. सभा अध्यक्ष डा. मोहनमान सैंजू
४. कार्यशाला गोष्ठीके सहभागीयोंके लिए प्रदर्शित सडक-नाटक की एक झलक

प्रकाशक
अन्तर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र
जि.पि.ओ. बक्स ३२२६
काठमाण्डू, नेपाल ।

आइ.एस.बि.एन. ९२ ९११५ २८१ १

अनुवादक
निवेदिता मिश्र

टाइपसेटिङ्ग
इसिमोड प्रकाशन इकाई

लेआउट
धर्मरत्न महर्जन

इस कृतिमे लेखकने अपने विचार और व्याख्याको प्रस्तुत किया है । इससे अन्तर्राष्ट्रिय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र (इसिमोड) की विशेषता प्रकट नहीं होती है । इसमे व्यक्त किए गए विचार एवं भावनाएं किसी भी राष्ट्र, क्षेत्र, शहर एवं क्षेत्र अन्तर्गत के अधिकार या इनके सीमाओंका हनन् नहीं करती हैं ।

दोशब्द

हिन्दू कुश-हिमालय में प्रशासन खास कर विकेन्द्रीकरण और प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन में सहभागिता के क्षेत्र में इसीमोड के कोशिशों में यह कार्यशाला गोष्ठी एक नये अध्यायको दर्शाता है । इस मंच पर गाँव और जिला स्तरों पर निर्वाचित महिलाएं और पुरूषों गाँव, जिला और राष्ट्रीय वन समुदायों के सदस्यों और नेटवर्को तथा गैर-सरकारी संस्थाओं को एकत्रित किया गया ।

हिन्दू कुश-हिमालय में विकेन्द्रीकरण, स्थानीय स्वशासन, सहभागी प्रशासन आदि प्रधान मुद्दों के रूप में उभर रहे हैं । स्थानीय समुदाय सहभागिता, शक्ति निक्षेपण और भूमिकाएं तथा जिम्मेवारियाँ स्थायी पर्वतीय विकास के लिए एक प्रभावकारी रूपरेखा के रूप में पहचानी गयी हैं । इस तरह पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरणीय संतुलन, समाजिक एवं सांस्कृतिक विषमताएं आदि संबंधित हैं, और निर्णय एवं योजना निर्माण में स्थानीय समुदाय एक प्रभावकारी भूमिका निभाते हैं । शासन का प्रश्न, जैसे कि स्थानीय स्रोत कैसे और किसके द्वारा उपयोगित किया जाना चाहिए, एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न बन चुका है । जबकि इस क्षेत्र के बहुत से भागों में प्राकृतिक पर्यावरण का ह्रास लगातार हो रहा है, उसी जगह हम इसके निवारण में संलग्न प्रोत्साह जनक कार्यों को देख सकते हैं ।

हिन्दू कुश क्षेत्र में रहने वाले 140 मिलियन लोगों के लिए आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से उपयुक्त पर्वतीय पर्यावरणीय संतुलन को उपलब्ध कराना ही इसीमोड का लक्ष्य है । इसीमोड यह समझता है कि पर्वतीय लोग, जो कि ज्यादातर सीमान्त और अन्य क्षेत्रों से अलग किए हुए वातावरण में रहते हैं, वे बाहरी प्रभावों से जल्दी ही प्रभावित हो जाते हैं, जो कि उनके सांस्कृतिक धरोहर और परंपरा के एकता को बुरी तरह प्रभावित करते हैं । जरूरत यह है कि उन्हें समान, सामाजिक और आर्थिक अवसर उपलब्ध कराए जाएं जो उनके जीवन को पर्वतीय पर्यावरण के संतुलन में स्थायीत्व प्रदान करे ।

पिछले कुछ वर्षो में समुदाय आधारित एवं अनौपचारिक गाँव स्तरीय संस्थाओं ने वन स्रोत व्यवस्थापन में अपनी क्षमता को प्रदर्शित किया हैं, और आज निर्वाचित गाँव और

जिला स्तरीय संस्थाओं के साथ बढता हुआ सबंध स्थापित हुआ है । निर्वाचित संस्थाओं की ओर विकेन्द्रीकरण और शक्ति निक्षेपण तथा जिम्मेवारियों से संबंधित नए कानून, नियम और विधानों ने इस प्रक्रिया को और भी बढाया है । अब हमने यह जाना है कि वन स्रोत, प्रशासन, विकेन्द्रीकरण और शक्ति निक्षेपण जैसे मुद्दों के अभाव में, स्थायी रूप से व्यवस्थित नहीं किए जा सकते हैं ।

हिन्दू कुश-हिमालय के बहुत से देशों ने विकेन्द्रीकरण को सहभागी विकास के पूर्व अवस्था के रूप में स्वीकारा है । पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक स्रोतों को निश्चित करने की जरूरत के तहत आर्थिक विकास और गरीबी निवारण के कोशिशों को संतुलित करने के क्रम में स्थानीय निर्वाचित संस्थाएं नयी चुनौतियों का सामना कर रही हैं ।

स्थानीय निर्वाचित संस्थाओं और अनौपचारिक या औपचारिक सामुदायिक संस्थाओं के बीच, संबंध, समन्वय और पूरकत्त्व जैसे शब्द नए और उदीयमान हैं । हिन्दू कुश-हिमालय क्षेत्र में स्थायी पर्वतीय स्रोत व्यवस्थापन के लिए यह आवश्यक है कि इन दोनों निकायों (स्थानीय निर्वाचित संस्थाएं, और सामुदायिक वन) को एक साथ लाया जाए और साथ ही समन्वयात्मक दृष्टिकोण पर जोर दिया जाए । हम चाहते हैं कि सामुदायिक वन स्रोतों के व्यवस्थापन और इसके लाभों के विभाजन में उन सर्वोत्तम अभ्यासों को अपनाए जो समानता, पारदर्शिता और जिम्मेवारी के सिद्धान्तों पर आधारित प्रजातांत्रिक प्रशासन की ओर अग्रसर हो ।

स्थानीय निर्वाचित संस्थाओं के नेताओं, जैसे कि गाँव विकास समिति या स्थानीय पंचायत के सदस्यों कार्यालय कर्मचारी, सामुदायिक वन उपभोक्ता समितियों के सदस्यों, गाँव वन विकास समिति के सदस्यों, महिला मण्डलों और दूसरे अनौपचारिक निकायों जो वन व्यवस्थापन से संबंधित हो, के बीच संबंध और समन्वय से ही ऐसी सर्वोत्तम योजनाएं बनती है ।

मैं कार्यशाला में सहयोग प्रदान करने वाले, जिला विकास समिति अध्यक्ष संघ, नेपाल, एवं समुदायिक वन उपभोक्ता समूह संघ, नेपाल, को धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ । आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराने और कार्यशाला गोष्ठी के संचालन में मदद करने के लिए मैं यू.एन.डी.पी. नेपाल, को भी धन्यवाद करता हूँ । फोर्ड फाउन्डेशन, नयी दिल्ली के सहयोग के बिना 'इसीमोड' के 'सहभागी प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन' कार्यक्रम का संचालन असंभव था, इसलिए मैं उन्हे भी धन्यवाद देता हूँ ।

मैं पूर्ण विश्वस्त हूँ कि हमारा प्रमुख लक्ष्य जो कि अनुभवों के आदान प्रदान के माध्यम से क्षितिज को विस्तीर्ण करना है, अवश्य पूरा होगा ।

इन लक्ष्यों की प्राप्ति से वे विकास योजनाएं उभरेगी जो स्व-निर्भरता तथा आर्थिक रूप से समर्थता की ओर पर्वतीय समुदायों का नेतृत्व करेंगी । इन पर्वतीय समुदायों के विचारों को सुना जाना और आदर किया जाना चाहिए क्योंकि यहाँ प्राकृतिक स्रोतों का वर्तमान और भविष्य के संततियों के लिए व्यवस्थापन, संरक्षण और सुरक्षण होता है ।

एगबर्ट पेलिङ्ग
महानिर्देशक

ज्ञापन

विभिन्न देशों के 80 महिलाओं और पुरूष से समन्वित छः दिनों की गोष्ठी का संचालन, एवं परिचालन एक चुनौति ही है । सबसे अहं बात तो यह है कि पहली बार इसीमोड इस तरह की कार्यशाला गोष्ठी में सक्रिय रूप से निर्वाचित प्रतिनिधियों को इसमें सम्मिलित कर रहा था ।

व्यक्तिगत एवं संस्थागत प्रतिबद्धता के अभाव में गोष्ठी सफल नहीं होती । क्योंकि इन व्यक्तियों और संस्थाओं ने पर्याप्त रूप में अपने समय और स्रोत को इस गोष्ठी के संचालन में व्यय किया है । यद्यपि व्यक्तिगत स्तर पर सभी के नामों का उल्लेख करना असंभव है फिर भी निम्न लिखित व्यक्ति एवं संस्थाएं धन्यवाद के हकदार हैं ।

- हम उन सभी सहभागियों का धन्यवाद करतें हैं जो व्यक्तिगत स्तर वा संस्थागत स्तर पर अपने-अपने जगहों से यात्रा कर इस कार्यशाला गोष्ठी में भाग लेने आए हैं । उन्होंने अपने इच्छा को खुले रूप में प्रस्तुत किया और व्यक्तिगत या संस्थागत प्रतिबद्धता को भी दिखाया ।
- हम खास तौर पर माधव पौडेल को जिन्होंने जिला विकास समिति संघ के माध्यम से इस कार्यशाला गोष्ठी की योजना और संचालन आदि के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध कराने के लिए स्वीकृति दिया । हमें आशा है कि वे 'जिला विकास समिति संघ' के दूसरे सहकर्मियों को इस कार्यशाला में सहयोग देने के लिए हमारा यह धन्यावद संदेश उन तक पहुंचाएगे । इसी तरह इस गोष्ठी में सहयोग देने के लिए हम श्री हरिप्रसाद न्यौपाने, कार्यकारी समिति, एवं 'फेकोफन' (FECOFUN) के दूसरे कर्मचारियों को धन्यवाद देते हैं ।
- 'इसीमोड' और सहभागियों की ओर से हम उन सहभागियों का धन्यवाद करते है जिन्होंने इस गोष्ठी के दौरान पत्र को प्रस्तुत किया । इन पत्रों ने महत्वपूर्ण मुद्दों के पूर्व पीढिका को तैयार किया और विचारों और परिणामों को और भी पुष्ट किया ।
- 'इसीमोड' और दूसरे सहभागियों के तरफ से डा. मोहन मान सैंजू को आरंभिक सत्र के अध्यक्ष पद के लिए स्वीकृति देने के लिए धन्यवाद करते हैं । अपने व्यस्त

कार्यक्रमों के बावजूद उन्होंने इस कार्य को स्वीकार किया जो यह परिलक्षित करता है कि वे स्थानीय प्रशासन और प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन में कितनी चाहना रखते है ।

- हम 'सर्वनाम' समूह को भी धन्यवाद देते हैं जिन्होंने सत्य घटना पर आधारित 'नुक्कड् नाटक' को प्रस्तुत करने की चुनौति को स्वीकार किया । इस नाटक के माध्यम से बडी ही कुशलता पूर्वक निर्वाचित संस्थाओं और समुदाय वन व्यवस्थापन संस्थाओं के बीच समन्वय के महत्त्व को दिखाया गया है ।
- श्री भूमि रमण नेपाल, अकल बहादुर बस्नेत और 'हरियाली संगीत समूह' के सदस्यों की प्रस्तुति ने साबित किया कि संगीत और संस्कृति संप्रेषण की सशक्त माध्यम हो सकती हैं । हम उन्हें प्रेरणाप्रद प्रस्तुति और अपने असल गानो की प्रस्तुति को हमारे साथ बाँटने के लिए धन्यवाद देते है ।
- संगीत और नृत्य भाषागत रूकावटों को दूर करने के सशक्त माध्यम हैं । इस कार्य में मदद करने और नेपाल के लोक संगीत को प्रस्तुत करने के लिए मंजुल नेपाल और उनेक समूह को धन्यवाद देते हैं ।
- हम अमर बहादुर पहाडी, श्याम घिमिरे और बढी खेल गाँव के महिलाओं और पुरूषों को धन्यवाद देना चाहते है जिन्होनें क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान मेजबान बनना स्वीकार किया । फलस्वरूप प्रत्यके व्यक्ति ने नेपाल के सामुदायिक वन को कार्यशील देखा और इस तरह हम में से बहुतों के लिए यह एक प्रेरणा प्रद उदाहरण था ।
- 'एन.इ.एफ.इ.जे.' (NEFEJ) ने संपूर्ण कार्यशाला गोष्ठी को फिल्म का रूप दिया है । हम इस प्रभावकारी फिल्म के प्रस्तुति को स्वीकृति देने के लिए उन्हें धन्यवाद करते हैं । हमें आशा है कि यह फिल्म कार्यशाला के परिणामों को अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचाएगा ।
- कार्यशाला गोष्ठी के उपयुक्त व्यवस्थापन उपलब्ध कराने के लिए हम 'गोदावरी रिसोर्ट' के कर्मचारियो को धन्यवाद देते हैं ।
- इस कार्यशालाको स्वरूप प्रदान करने के लिए एक कार्यकर्ता समूह की भी आवश्यकता थी । हम विशेष रूप से 'स्वीस सामुदायिक वन परियोजना' को धन्यावद देते है जिसने खगेन्द्र सिक्देल को पेशागत मदद के लिए उपलब्ध कराया । श्री सिक्देल के साथ काम करना एक खुशनुमा अनुभव था । आशा है कि भविष्य में भी उनके साथ काम करने के अवसर प्राप्त होगे ।
- हम ज्यूडी एमटीजको भी धन्यवाद करतें है जिन्होने अपने पेशागत क्षमता के माध्यम से इस कार्यशाला की योजना और व्यवस्थापन में सहयोग दिया । इस चुनौति पूर्ण कार्यशाला के विवरण को एकत्र करने तथा उसे समग्र रूप में प्रस्तुत करने में अभी आगे भी संलग्न रहेंगी ।
- विभिन्न भाषाओं की संप्रेषणता समस्याओं को चुनौतिपूर्ण रूप में स्वीकार करने के लिए हमारे पास दुभाषियों की एक समूह ही थी । उनके सहयोग ने यह सिद्ध किया कि भाषा इस कार्यशाला गोष्ठी में रूकावट नहीं थी । हम विशेष रूप से निवेदिता

मिश्र, त्रिभुवन पौड्याल, राजीव सिंह, मृणालनी राई, विनोद सुवेदी एवं विष्णु के.सी को धन्यवाद करते है ।

मैं अपने 'इसीमोड' के सहकर्मियों को धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस कार्यशाला गोष्ठी के आयोजना के लिए महिनों से बहुत ही क्षमता पूर्वक कार्य करते रहे हैं । विशेषकर मैं गोविन्द श्रेष्ठ, रीता राना, सरीता जोशी, (पर्वतीय प्राकृतिक स्रोत विभाग के) को धन्यवाद करता हूँ ।

अनुपम भाटिया

संक्षेप

इस विवरण में विकेन्द्रीकरण और सहभागी तथा स्थानीय स्व-प्रशासन जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है । हिन्दू कुश क्षेत्र के लोगों की आवाज को एक साथ एक मंच पर उपस्थित करने के लिए कार्यशाला श्रृंखलाबद्ध कोशिशों का प्रतिनिधित्व करती है । ऐ से वातावरण में जहां कि पर्यावरण का तीव्रता पूर्वक ह्रास हो रहा है, स्थानीय प्राकृतिक स्रोतों से संबधित प्रशासन एवं अधिकारों के प्रश्न पर विचार विमर्श करने के लिए इस मंच का उपयोग हुआ है ।

हिन्दू कुश-हिमालय में प्रशासन, खासकर विकेन्द्रीकरण तथा प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन में सहभागिता के क्षेत्र में 'इसीमोड' के कोशिशों का एक नया आयाम इस कार्यशाला में प्रस्तुत हुआ है । यस मंच पर गाँव तथा जिला स्तर पर स्थानीय निर्वाचित संस्थाओं के जिला या राष्ट्रीय समुदाय वन समूह और नेटवर्को तथा गैर-सरकारी संस्थाओं, के महिला एवं पुरूष सदस्यों प्रतिनिधियों को एक साथ उपस्थित किया गया है ।

विषय सूचि

१

कार्यशाला गोष्ठी परिचय

२

उद्घाटन सत्र

३

सभा-सत्र

४

पत्र-प्रस्तुति

५

दर्पण समूह विचार विमर्श

६

द्वितीय सभा-सत्र

७

अंतिम-सत्र

८

परिशिष्ट